❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक
आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, दिल्ली
प्रत्येक आर्यजन का पंजीकरण अनिवार्य
महासम्मेलन में भाग लेने वाले आर्यजन कृपया पंजीकरण हेतु लॉगइन करें–
www.aryamahasammenan.com
पंजीकरण सम्बन्धी आवश्यक निर्देश पृष्ठ 8 पर प्रकाशित किए गए हैं।

वर्ष 48, अंक 45 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 1 सितम्बर, 2025 से रविवार 7 सितम्बर, 2025
विक्रमी सम्वत् 2082 सृष्टि सम्वत् 1960853126
दयानन्दाब्द : 202 पृष्ठ : 8
वार्षिक शुल्क : 250 रुपये दूरभाष: 23360150
ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती एवं 150वें आर्यसमाज स्थापना वर्ष के आयोजनों का समापन

आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

30-31 अक्तूबर एवं 1-2 नवम्बर, 2025

स्वर्ण जयन्ती पार्क, रोहिणी, सैक्टर-10, दिल्ली-110085

सम्पादकीय

एक अद्भुत, अनुपम, अनूठा और स्वर्णिम अवसर है यह महासम्मेलन

महर्षि की शिक्षाओं को जन जन तक पहुंचाएंगे – वैदिक धर्म की ओम् पताका हर घर पर फहराएंगे

बहते हुए समय के अनंत प्रवाह में कुछ विशेष अवसर ऐसे अनोखे और अनूठे भी हमारे सामने आते हैं जब व्यक्ति, परिवार, समाज, संगठन, प्रांत और देश की परिधि से भी आगे विश्व स्तर पर उमंग, उत्साह और उल्लास की लहरें स्वयं प्रवाहित होने लगती हैं। मानव मात्र को यह अनुभव होने लगता है कि मेरे अपने जीवन और संगठन की समस्त उपलब्धियों का यह सुनहरा अवसर है, यह मेरे स्वयं के लिए, परिवार, समाज और संगठन के लिए सबसे बड़ा उत्सव है, यह केवल एक उत्सव ही नहीं संपूर्ण जगत के लिए प्रेरणा का महान पर्व है, यह एक ऐसी अमृत बेला है जिस पर हमें मानव समाज के कल्याण हेतु अपने मन को संकल्पित करना है, अपने कर्तव्यों के पथ पर आगे बढ़ना है, और यह केवल अपने लिए और अपनों के लिए ही अवसर विशेष नहीं अपितु संपूर्ण मानवजाति के उत्थान के अभिनव अभियान के रूप में हम सबको सफल और सिद्ध करना है।

जब संपूर्ण विश्व के आर्य जन, आर्यनेता, स्त्री पुरुष, बच्चे, युवा और बुजुर्ग, भारत राष्ट्र के राजनेतागण, धर्म और अध्यात्म की महान विभूति, वैदिक विद्वान, संन्यासी गण, गुरुकुल, कन्या गुरुकुल, विद्यालय, महाविद्यालय, विश्वविद्यालयों के प्रोफेसर, आचार्य, अध्यापक, अध्यापिका, छात्र, छात्राएं और विभिन्न विश्व विख्यात उद्योगपति महानुभाव इत्यादि लाखों की संख्या में पधारेंगे। उस समय यह एक विहंगम दृश्य सिद्ध होगा जब भारत के सभी प्रांतों से आर्यों की टोलियां महर्षि दयानंद सरस्वती जी की जय-जयकार करते हुए, हाथ में ओम ध्वज लेकर , आर्य समाज अमर रहे, वेद की ज्योति जलती रहे का उदघोष करते हुए महासम्मेलन स्थल पर मुख्य द्वार के भीतर प्रवेश करेंगे, भीतर घुसते ही चारों तरफ ओम ध्वज लहराते देखेंगे, वेद मंत्रों की मधुर ध्वनि सुनाई देगी, यज्ञ की सुगंध का अनुभव होगा, योगासन और प्राणायाम की सुंदर कक्षाओं का दर्शन होगा, आर्य समाज के ऐतिहासिक भजनों की स्वरलहरियां गूंजेगी और आर्य समाज के सिद्धांत, मान्यता और परंपराओं का दिग्दर्शन होगा, उस समय का जरा विचार तो कीजिए की वह कैसा अदभुत, अनुपम और अनूठा अवसर होगा।

जी हां, महर्षि दयानंद सरस्वती जी के 200वें जयंती और आर्य समाज के 150वें स्थापना वर्ष के 2 वर्षीय आयोजनों के भव्य समापन समारोह के रूप में दिल्ली के स्वर्ण जयंती पार्क, सेक्टर 10 में आयोजित होने वाला अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2025 कुछ ऐसी ही स्वर्णिम बेला है। जब संपूर्ण विश्व के आर्य जन, आर्यनेता, स्त्री पुरुष, बच्चे, युवा और बुजुर्ग, भारत राष्ट्र के राजनेतागण, धर्म और अध्यात्म की महान विभूति, वैदिक विद्वान, संन्यासी गण, गुरुकुल, कन्या गुरुकुल, विद्यालय, महाविद्यालय, विश्वविद्यालयों के प्रोफेसर, आचार्य, अध्यापक, अध्यापिका, छात्र, छात्राएं और विभिन्न विश्व विख्यात उद्योगपति महानुभाव इत्यादि लाखों की संख्या में पधारेंगे। उस समय यह एक विहंगम दृश्य सिद्ध होगा जब भारत के सभी प्रांतों से आर्यों की टोलियां महर्षि दयानंद सरस्वती जी की जय-जयकार करते हुए, हाथ में ओम् ध्वज लेकर , आर्य समाज अमर रहे, वेद की ज्योति जलती रहे का उदघोष करते हुए महासम्मेलन स्थल पर मुख्य द्वार के भीतर प्रवेश करेंगे, भीतर घुसते ही चारों तरफ ओम् ध्वज लहराते देखेंगे, वेद मंत्रों की मधुर ध्वनि सुनाई देगी, यज्ञ की सुगंध का अनुभव होगा, योगासन और प्राणायाम की सुंदर कक्षाओं का दर्शन होगा, आर्य समाज के ऐतिहासिक भजनों की स्वरलहरियां गूंजेगी और आर्य समाज के सिद्धांत, मान्यता और परंपराओं का दिग्दर्शन होगा।

– शेष पृष्ठ 2 पर

महासम्मेलन कार्यालय द्वारा विशेष सूचना

- व्यवस्था और सुविधा की दृष्टि से सभी महानुभावों से निवेदन है कि वे 30 अक्टूबर 2025 को किसी भी समय दिल्ली पहुंचने वाली ट्रेनों में आरक्षण करवाएं।
- महासम्मेलन का कार्यक्रम 2 नवम्बर की रात्रि तक चलेगा अत: अपनी सुविधानुसार 2 नवम्बर की रात्रि अथवा 3 नवम्बर को वापस जाने का आरक्षण करवा सकते हैं।

★ समस्त आर्यजन सम्मेलन में पधारने से पूर्व अपना पंजीकरण अवश्य कराएं। पंजीकरण हेतु लॉगइन करें –
www.aryamahasammelan.com

महासम्मेलन सम्बन्धी आधिकारिक जानकारी हेतु वेबसाइट देखें।
सभा द्वारा संचालित आधिकारिक व्हाट्सएप चैनल एवं टेलीग्राम चैनल से जुड़ें।

व्हाट्सएप चैनल
tinyurl.com/aryasamajwa

QR कोड स्कैन करें

टेलीग्राम चैनल
@thearyasamaj

आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, दिल्ली-2025

भव्य स्मारिका का प्रकाशन

समस्त आर्यजनों, संस्थाओं/आर्य समाजों/पारिवारों से विज्ञापन सहयोग आमन्त्रित

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन – 2025 दिल्ली के अवसर पर भव्य स्मारिका का प्रकाशन किया जाएगा। इस स्मारिका के लिए समस्त आर्यजनों, संस्थाओं, आर्यसमाजों एवं आर्य परिवारों से विशेष विज्ञापन सहयोग आमन्त्रित किए जाते हैं। यदि आप अपना कोई शुभकामना सन्देश विज्ञापन, अपनी संस्था/आर्य समाज की जानकारी अथवा अपने माता-पिता, सगे-सम्बन्धी का परिचय या अपने परिवार के सम्बन्ध में सामग्री प्रकाशित करवाना चाहते हैं तो विज्ञापन के रूप में अपनी पारिवारिक पृष्ठभूमि और कार्य का परिचय दे सकते हैं। विज्ञापन दरें इस प्रकार हैं–

1. पूरा पृष्ठ (रंगीन)	50,000/-	2. आधा पृष्ठ (रंगीन)	25,000/-
3. पूरा पृष्ठ (B/W)	30,000/-	4. आधा पृष्ठ (B/W)	15,000/-
5. आवरण (अन्दर) (रंगीन-पृष्ठ 2-3)	2,50,000/-	6. अन्तिम आवरण (रंगीन-पृष्ठ 4)	2,50,000/-

विज्ञापन प्रकाशित कराने या अधिक जानकारी के लिए '**स्मारिका संयोजक**', 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001 को लिखें/9311721172 पर सम्पर्क करें या aryasabha@yahoo.com पर ई-मेल करें। – **संयोजक**

देववाणी-संस्कृत

आत्माग्नि का प्रदीपन

वेद-स्वाध्याय

अग्निमिन्धानो मनसा धियं सचेत मर्त्यः। अग्निमीधे विवस्वभिः।।
-ऋ० 8।102।22 ; साम० पू० 1।1।2।9
ऋषिः- पावको बार्हस्पत्यः।। देवता-अग्निः।। छन्दः - निचृद्गायत्री।।

शब्दार्थ - मनसा = मन द्वारा **अग्निम्** = अग्नि को, आत्मा को **इन्धानः** = प्रज्वलित करता हुआ **मर्त्यः** = मनुष्य **धियम्** = सद्बुद्धि को और सत्कर्म को **सचेत** = प्राप्त करे। मैं **विवस्वभिः** = तम को हटानेवाली ज्ञान-किरणों द्वारा **अग्निम्** = इस अग्नि को **ईधे** = प्रदीप्त करता हूँ।

विनय - मैं जो प्रतिदिन आग जलाकर अग्निहोत्र करता हूँ उससे क्या हुआ, यदि इस अग्नि-दीपन से मेरे अन्दर की आत्म-ज्योति न जग सकी। यदि मेरे प्रतिदिन अग्निहोत्र करते रहने पर भी मेरे जीवन में कुछ भेद न आया, मेरा व्यवहार-आचरण वैसा-का-वैसा रहा, न मुझमें सद्बुद्धि ही जाग्रत् हुई और न मैं सत्कर्मों में प्रेरित हुआ, तो मेरा यह सब अग्निचर्या करना व्यर्थ हैं सचमुच हरेक बाह्य-यज्ञ अन्दर के यज्ञ के लिए है। बाहर की अग्नि इसलिए प्रदीप्त की जाती है कि उस द्वारा एक दिन अन्दर की आत्माग्नि प्रदीप्त हो जाए। यह आत्माग्नि मन द्वारा प्रदीप्त की जाती है, इसीलिए कहा गया है कि बाहर के द्रव्यमय यज्ञ की अपेक्षा अन्दर का मानसिक यज्ञ हजार गुणा श्रेष्ठ होता है, अतः मनुष्य को चाहिए कि मन द्वारा अपनी अन्तर अग्नि को जलाये, आत्माग्नि को प्रदीप्त करे और इस प्रकार 'धी' को, सद्बुद्धि को प्राप्त कर ले तथा सत्कर्म में प्रेरित होता हुआ आत्मकल्याण को पा जाए। जो मनुष्य मनन करते हैं, अर्थात् आत्मनिरीक्षण, आत्मचिन्तन, विचार और भावना करते हैं, जाप करते हैं तथा धारणा, ध्यान, समाधि लगाते हैं, वे इन सब मानसिक प्रक्रियाओं द्वारा आत्मज्योति को जगा लेते हैं और उन्हें सत्यबुद्धि, ज्ञानप्रकाश, सदा ठीक कर्म में ही प्रवृत्त करनेवाली समझ मिल जाता है, अतः आज से मैं भी इस अग्नि को प्रदीप्त करूंगा, विवस्वतों द्वारा-तमो निवारक ज्ञानकिरणों द्वारा इस अग्नि को प्रज्वलित करना प्रारम्भ करूँगा। जैसे सूर्यकिरणों द्वारा संसार की सब प्रकार की ज्योतियाँ प्रदीप्त और प्रकाशित होती हैं, वैसे उस ज्ञान-सूर्य- सविता-परम आत्मा की किरणों द्वारा मैं अपनी आत्माग्नि को प्रदीप्त करूँगा। सत्यज्ञान देनेवाले सब वेदादि ग्रन्थ, सत्य का उपदेश देनेवाले सब गुरु, आचार्य मेरे अन्दर मन की सब सात्तिवक वृत्तियाँ-ये सब उसी ज्ञान-सूर्य की भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में फैली हुई किरणें हैं, विवस्वत् हैं। मैं इनके द्वारा आज से अपनी आत्माग्नि को प्रतिदिन प्रदीप्त करता जाऊँगा। यही मेरे उद्धार का सीधा, साफ और चौड़ा मार्ग है।

-: साभार:-
वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

प्रथम पृष्ठ का शेष

एक अद्भुत, अनुपम, अनूठा और स्वर्णिम अवसर है यह महासम्मेलन

उस समय का जरा विचार तो कीजिए की वह कैसा अदभुत, अनुपम और अनूठा अवसर होगा।

इस अवसर पर हम आर्यजन, आर्य समाजी, महर्षि दयानंद सरस्वती जी के अनुयाई कैसा अनुभव करेंगे, हमारे मन में कितनी प्रसन्नता होगी, गहराई से चिंतन करते समय यह विचार भी मन में आना स्वाभाविक है कि जब महर्षि जी की 100वीं जयंती मनाई गई तब हम इस रूप में संसार में नहीं थे और जब 300वीं जयंती मनाई जाएगी, उस समय हम कहां पर, किस रूप में होंगे यह ईश्वर के अधीन है। किंतु महर्षि की 200वीं जन्म जयंती की और आर्य समाज का 150वें ऐतिहासिक स्थापना वर्ष के आयोजनों के समापन समारोह के अवसर पर अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के हम साक्षी बने हैं। इन दोनों महान अवसरों की गरिमा के गौरव को हम अनुभूत कर रहे हैं, हम बढ़भागी हैं, हम सौभाग्यशाली हैं, हम आर्य हैं, हम आर्य समाजी हैं, हम महर्षि दयानंद के शिष्य हैं, उस महर्षि दयानंद के जिसने मानव जाति के कल्याण के लिए कितने-कितने कष्ट उठाए, कितना तप और त्याग किया, हम उस महान गुरु के शिष्य हैं जिसके तपोबल के सामने पाप और पापी थर-थर कांपा करते थे, जिसने विषम से विषम परिस्थितियों में भी वेद और ईश्वरीय सिद्धांतों से समझौता नहीं किया, जो हमेशा सत्य और केवल सत्य के लिए जिया, और जिसने अपने प्राण घातक को भी अभय दान देकर जगत में एक अनोखा उदाहरण प्रस्तुत किया, ऐसे महान गुरुवर का 200वां जयंती वर्ष और उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज का 150वां स्थापना वर्ष, उसके दो वर्षीय आयोजनों का समापन समारोह और वह भी अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के रूप में। जरा विचार तो कीजिए आर्य समाज एक आंदोलनकारी विश्व व्यापी संगठन, जिसने 150 वर्षों की अपनी सेवा यात्रा में जो कीर्ति स्तम्भ स्थापित किए हैं, वे बिलकुल ऐसे ही कीर्तिमान हैं जैसे समुद्र के जहाजों को अंधेरों में दिशा दिखाने वाले प्रकाश स्तम्भ या शहरों की सड़कों पर यात्रियों की गाड़ियों के मार्गदर्शन के लिए साइनबोर्ड लगे होते हैं।

इस दिव्य और मनोहारी वातावरण में हमारे मन में ये कर दृश्य भी उभरेंगे और विचार भी उमड़ेंगे कि धन्य है वह टंकारा, गुजरात की पुण्य धरा जहां महर्षि दयानंद सरस्वती ने जन्म लिया। धन्य थे वे माता पिता जिन्होंने महर्षि को जन्म दिया। धन्य थे वे लोग जिन्होंने महर्षि का बचपन और किशोरावस्था देखी, धन्य थे गुरु विरजानंद दंडी जिन्होंने युग प्रवर्तक महर्षि को शिक्षा दीक्षा प्रदान की, धन्य थे वे महापुरुष जिन्होंने महर्षि का साक्षात दर्शन किया, धन्य थे वे आर्य महान वीर बलिदानी जिन्होंने महर्षि की प्रेरणा से भारत माता की परतंत्रता की बेड़ियों को काटने के लिए अपना सर्वस्व समर्पित कर अमरता को प्राप्त किया और धन्य हैं हम सभी आर्य जन जो आज महर्षि दयानंद सरस्वती के 200वें जयंती एवं आर्य समाज स्थापना के 150वें वर्ष के अवसर पर उमंग और उत्साह पूर्वक महासम्मेलन में सहभागी बन रहे हैं।

अतः आइए, अपने जीवन के इस सबसे महत्वपूर्ण अवसर के हम साक्षी बनें, केवल हम स्वयं ही नहीं अपने परिवार, इष्ट मित्रों, परिचितों, सगे संबंधियों और अपने गली, मोहल्ले में रहने वाले पड़ोसियों को भी निमंत्रण दें, और उन्हें लेकर भी आए, आर्य समाज, प्रांतीय सभाएं , शिक्षण संस्थानों और आर्य प्रतिष्ठानों के लिए निवेदन है कि सभी अपने-अपने स्तर पर अपने क्षेत्रीय विशिष्ट और वरिष्ट नागरिकों को भी निमंत्रण दें, उन्हें आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती और आर्य समाज की विश्व को क्या-क्या देन है, इसका परिचय देकर इस अवसर पर आने का आग्रह करें, बीच में उन्हें याद भी दिलाएं कि 30 अक्टूबर से 2 नवम्बर 2025 तक स्वर्ण जयंती पार्क, सेक्टर 10, रोहिणी दिल्ली में अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2025, आर्यों का महाकुंभ है, जहां भारत के कोने-कोने से विश्व के 40 देशों से लाखों की संख्या में लोग पधार रहे हैं, इस अवसर पर आर्य समाज की ओर से जहां एक तरफ यज्ञ, योग, स्वाध्याय, सत्संग, सेवा, साधना, भजन, योगासन, व्यायाम के विशेष आयोजन होंगे, वहीं भारत राष्ट्र के सामने जो वर्तमान में कठिन और गंभीर चुनौतियां हैं उन पर गहन चिंतन मंथन भी होगा, व्यक्ति परिवार समाज देश और दुनिया के कल्याण के लिए योजनाओं के निर्धारण और क्रियान्वयन पर भी चिंतन होगा। लाखों आगंतुकों के भोजन, आवास आदि की भी व्यवस्था रहेगी। ये निमंत्रण एक खुला निमंत्रण है, संपूर्ण विश्व के आर्यजन अपने अपने स्तर पर अवश्य प्रयास करें, यह सम्मेलन हम सबका अपना निजी सम्मेलन है, इसलिए पूरी शक्ति से प्रचार करें, आर्य समाज का विस्तार करें, महर्षि दयानंद सरस्वती जी के उदघोष 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम' को साकार करें। - *सम्पादक*

प्रत्येक आर्यसमाज एवं आर्यजन करें प्रचार

समस्त आर्यसमाजों एवं आर्यजनों अनुरोध है कि सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की तिथियां नोट करें ले और सोशल मीडिया तथा प्रिंट मीडिया के प्रत्येक प्लेटफार्म पर इसका प्रचार करें। आर्यसमाजें अपने साप्ताहिक सत्संगों में नियमित रूप से इसकी सूचना दें, अपने आर्यसमाज की बैठक आमन्त्रित करें और समिति गठित करें तथा समाज के प्रत्येक सदस्य को सपरिवार पहुंचने के लिए प्रेरित करें। इस अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन को भव्य, विराट एवं ऐतिहासिक बनाने में आप सबका सहयोग सादर अपेक्षित है। *ज्ञान ज्योति महोत्सव आयोजन समिति*

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन - 2025 दिल्ली के अवसर पर

वानप्रस्थ और संन्यास-दीक्षा समारोह

आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, दिल्ली - 2025 के अवसर पर गत सम्मेलनों की भांति वानप्रस्थ और संन्यास ग्रहण करने के लिए वानप्रस्थ और संन्यास की दीक्षा का भव्य कार्यक्रम आयोजित होगा, जो आर्य महानुभाव इस ऐतिहासिक अवसर पर आर्यजगत् के मूर्धन्य संन्यासी, वैदिक विद्वानों से वानप्रस्थ अथवा संन्यास की दीक्षा लेना चाहते हों, इस कार्यक्रम में सादर आमन्त्रित हैं।

दीक्षा के इच्छुक महानुभाव कृपया अपना विवरण 'संयोजक, यज्ञ समिति' के नाम सम्मेलन कार्यालय - 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 110001 के पते पर भेजें, ताकि उनके संस्कार की समस्त व्यवस्था बनाई जा सके। महासम्मेलन आयोजन समिति इस कार्यक्रम को विशेष प्रकार से आयोजित करेगी।

- ज्ञान ज्योति महोत्सव आयोजन समिति

श्राद्ध पक्ष
7 से 21 सितम्बर पर विशेष

श्राद्ध की अन्ध परम्परा पर लगाएं विराम

जीवित माता-पिता की सेवा और करें सम्मान

वैदिक धर्म, संस्कृति उतनी ही प्राचीन है जितना कि मानव जीवन। हमारे यहां संयुक्त परिवार प्रणाली में माता-पिता और आचार्य से लेकर वरिष्ठ और विशिष्ट नागरिकों की सेवा तथा सम्मान करना एक आदर्श परंपरा के रूप में सदा से विद्यमान रही है। माता-पिता की आज्ञा पालन और सेवा तथा सम्मान को महत्व देने वाले हमारे महापुरुषों में जहां मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम हुए, वहीं भक्त पुंडरीक, नचिकेता और श्रवण कुमार जैसी अनुकरणीय महान विभूतियां वैदिक संस्कारों को निरंतर पोषित करती रहीं। किंतु बहते काल प्रवाह के साथ युग बदले, समय बदला और धीरे-धीरे हमारी संस्कृति भी बदलती गई, हमारे यहां पितृ यज्ञ की जो परंपरा थी अर्थात जीवित माता-पिता की सेवा करने का जो आदर्श था वह भी पश्चिमी हवा के वेग से प्रभावित होकर बदलता गया, आज संपूर्ण देश और दुनिया में अगर आज भी सबसे ज्यादा उपेक्षित कोई है तो वह बुजुर्ग माता-पिता ही दिखाई देते हैं। माता-पिता और आचार्य के तिरस्कार और अपमान से आहत होकर 19वीं सदी के अद्वितीय महापुरुष, आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती जी ने सुखी परिवार की आदर्श परंपरा और व्यवस्था का उपदेश देते हुए यह स्पष्ट संदेश दिया था कि प्रथम पूजनीया देवता माता है, संतानों को चाहिए की माता की सेवा सुश्रुषा तन- मन धन से करें। उसे सब प्रकार प्रसन्न रखें और उसका अपमान कदापि न करें। दूसरा देव पिता है, उसका भी पूजन माता के समान होना चाहिए। तीसरा देव विद्या का दाता आचार्य है। तन-मन-धन से उसकी सेवा करना शिष्यों का कर्तव्य है।

अत: यहां पर विचारणीय बिंदु यह है की महर्षि ने जिन मूर्तिमान देवताओं का वर्णन किया वह जीवित रहते हुए ही मानव और मानव समाज को पोषित, पल्लवित और पुष्पित करते हैं और उनका यह संदेश इसलिए भी अनुकरणीय है कि इन जीवित देवों के बिना किसी का जीवन भी संस्कारित, सुविकसित और सफल नहीं हो सकता। इसलिए महर्षि का यह सार्वजनिक और सर्वमान्य परंपरा का संदेश, उपदेश और आदेश है, जिसको अपनाने से व्यक्ति, परिवार, समाज, देश और दुनिया में सुख, शांति और आनंद की अभिवृद्धि संभव होगी। आज जो संयुक्त परिवार प्रणाली टूटती और बिखरती जा रही है, परिणाम स्वरूप चारों तरफ आपाधापी, अशांति, दुख, पीड़ा, संताप, कष्ट और क्लेश दिखाई दे रहे हैं, उससे निजात पाने का भी यही सटीक विधि और विधान है कि परिवार को एक सूत्र में बांधने का महर्षि का यह प्रेरक संदेश है, महर्षि की इस आज्ञा को अपनाने से ही समाज का भला हो सकता है। लेकिन आजकल जीवित माता-पिता बड़े बुजुर्ग और रिश्ते नाते तो लगातार टूटकर बिखरते जा रहे हैं लेकिन अंध परंपरा और ढोंग, पाखंड तथा अंधविश्वास के कारण समाज में मृतकों का श्रद्धा मनाने की गलत परंपरा आगे बढ़ रही है। जो लोग जीवित माता-पिता को अपमानित और तिरस्कृत करते हैं, जीवित रहते उन्हें भोजन, दवाई और समस्त साधनों के लिए तड़पाते हैं, दुखी करते हैं और खून के आंसू रुलाते हैं, वही लोग उनके मरने के बाद वर्ष में एक बार 15 दिन तक श्राद्ध मानने का ढोंग करते हैं और वह भी केवल एक दिन उनके नाम पर ब्राह्मण को भोजन कराना, वस्त्र आदि दान करना भी वे नादान लोग इसलिए करते हैं क्योंकि उनको डराया और बहकाया जाता है कि अगर आपने अपने पितरों को श्राद्ध और तर्पण से संतुष्ट नहीं किया तो वे तुम्हारा अनिष्ट कर देंगे। अगर यह डर उन तथाकथित श्राद्ध करने वाले श्रद्धालु लोगों को न हो तो संभवत: वे लोग शायद इस अंध परंपरा में भी ना पड़े। यहां पर यह भी सोचने की बात है जीवित माता-पिता का निरादर करने वाले अगर समझते हैं कि मृतकों के नाम पर श्राद्ध करने से पितरों के ऋण से उऋण हो जाएंगे तो उनका यह विचार बिल्कुल ग़लत है। इसलिए मरने के बाद चाहे कोई श्राद्ध करें या न करें इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। लेकिन यहां पर महर्षि का संदेश है की

– शेष पृष्ठ 7 पर

...... माता-पिता की आज्ञा पालन और सेवा तथा सम्मान को महत्व देने वाले हमारे महापुरुषों में जहां मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम हुए, वहीं भक्त पुंडरीक, नचिकेता और श्रवण कुमार जैसी अनुकरणीय महान विभूति वैदिक संस्कारों को निरंतर पोषित करती रहीं। किंतु बहते काल प्रवाह के साथ युग बदले, समय बदला और धीरे-धीरे हमारी संस्कृति भी बदलती गई, हमारे यहां पितृ यज्ञ की जो परंपरा थी अर्थात जीवित माता-पिता की सेवा करने का जो आदर्श था वह भी पश्चिमी हवा के वेग से प्रभावित होकर बदलता गया, आज संपूर्ण देश और दुनिया में अगर आज भी सबसे ज्यादा उपेक्षित कोई है तो वह बुजुर्ग माता-पिता ही दिखाई देते हैं। ......

परिवर्तन : आता नहीं है – लाया जाता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी : एक संक्षिप्त जीवन परिचय

विरोधियों का दु:ख – 'महर्षि दयानन्द निष्कलंक चले गए'

गतांक से आगे –

शरीर का अन्त तो होना था, पर उसके लिए दीपावली की प्रतीक्षा थी। उपचार के दौरान भी उपदेश- जीवन से उपदेश, वाणी से उपदेश, कलम से उपदेश, व्यवहार से उपदेश और अन्तत: मृत्यु से भी उपदेश। गुरुदत्त – जिसका जीवन, जीवन से न बदला था, मृत्यु से बदल चुका था। सन्देश कैसे ? सन्देश, ईश्वर के प्रति समर्पण का। सन्देश, सत्य के प्रति समर्पण का। सन्देश, मानव एवं समाज के प्रति समर्पण का। क्या कमाल के सन्देश हैं, बोल नहीं रहे हैं, पर उपदेश चल रहा है। लिख नहीं रहे हैं पर उपदेश चल रहा है, पल-पल, क्षण-क्षण उपदेश। दीपावली की शाम संध्यावेला में ध्यानावस्थित अगली यात्रा की तैयारी में थे, कितने ही दर्शनार्थ खड़े हैं-मौन सब के 'शब्द' बन्द हो चुके थे, सबके नेत्र उस अनन्त यात्रा पर जाने वाले यात्री को निहार रहे थे, उन नेत्रों को भी पता नहीं, कब, किसके, कितने आंसू निकले और वायु में विलीन होती आत्मा को देखकर कितने अश्रुजल से धरती गीली होती रही- मानो अश्रु नहीं अश्रुधारा हो।

छोड़ दिए श्वांस, किया प्रभु का आभार, जब थी शिकायत गौमाता की स्थिति देख, तब थी! अब कोई शिकवा नहीं, अब को शिकायत नहीं। बारम्बार प्रभु का आभार-केवल आभार-केवल आभार- **'हे प्रभु ! तूने अच्छी लीला की, तेरी इच्छा पूर्ण हो!'** हम सबको अपार जीवन शक्ति देकर प्रस्थान कर गए, जाने कौन-सी यात्रा पर। एक दीपक बुझ गया-लाखों दिए जलाकर।

बाकी तो शरीर ही शेष था। अगले दिन विशाल अन्तिम यात्रा में न जाने कितने, पैर पटकते, दु:खी होते चल रहे थे, मन पर बोझ था, उस बोझ को उतारने की तैयारी हर उस व्यक्ति को करनी थी, जिसने एक शब्द भी दयानन्द का सुना था। जिसने एक शब्द भी दयानन्द का पढ़ा था, जिसने एक क्षण भी दयानन्द को देखा था।

जो घोर विरोधी थे-दु:ख बहुत था उनको भी। उनको एक दु:ख और था- **'दयानन्द निष्कलंक चले गए।'**

कैसे-कैसे भाव थे विरोधियों के भी-

"दो आफताब डूबे हैं एक आन में,
एक मगरिब में एक हिन्दोस्तान में।"

"सूरज की रोशनी से मुजम्मत हुई जरुर,
इसने किसी चिराग को जलने नहीं दिया।"

अजमेर की मलूसर शमशान भूमि- संस्कारविधि अनुसार मन्त्रोच्चार हुआ- अन्तिम संस्कार हुआ-सब खत्म।

नहीं सब खत्म नहीं हुआ, एक चीज तो अभी शेष थी-उनके वो शब्द –**"मेरे शरीर की अग्नि भस्म, गंगा में न बहाना, किसी किसान के खेत की मिट्टी मे मिलाना, ताकि उसकी फसल की वृद्धि में मैं भी काम आ सकूं, मेरा शरीर भी सहायक हो सके...."**, आहा ! कैसा शानदार जीवन, कैसा शानदार अन्त। अन्त केवल शरीर का, नश्वर था, जाना ही था, पर विचार अक्षुण्ण थे, अक्षुण्ण हैं और रहेंगे। किसी के दिए नहीं थे, किसी से मिले नहीं थे, अपने बनाए नहीं थे, उस परमपिता परमात्मा की 'वेदवाणी' के ही तो विचार थे तो भला वो कैसे समाप्त होते-न हुए-न होंगे और अब उनको बढ़ाना आर्यसमाजस्थ लोगों का काम है-150 वर्षों से आगे बढ़ाते रहे हैं- बलिदान दिए और अब आगे भी देते रहेंगे। दयानन्द का शरीर नश्वर था, दयानन्द अमर हैं उनकी वाणी अमर है, उनकी लेखनी अमर है और अमर है उनका प्रेरक जीवन।

धन्य दयानन्द-धन्य-धन्य दयानन्द ।

– क्रमश:

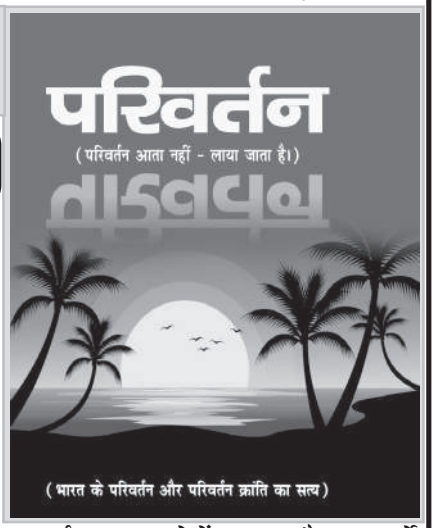

पुस्तक घर बैठे/ऑनलाइन प्राप्त करने हेतु कोड स्कैन/लॉगइन करें
www.vedicprakashan.com
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
वैदिक प्रकाशन
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
मो. 09540040339, 011-23360150

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती एवं आर्यसमाज स्थापना के 150वें वर्ष के अवसर पर

वैदिक विचारधारा को विश्वभर में गुंजायमान करने के संकल्प के साथ

भारत की राजधानी दिल्ली में विश्वभर के आर्यों का महाकुम्भ

ज्ञान-ज्योति महोत्सव के आयोजनों का समापन

आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी
अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

स्वर्ण जयन्ती पार्क, सै०-10, रोहिणी, दिल्ली-85

30 अक्तूबर से 2 नवम्बर, 2025

कार्तिक, शुक्ल पक्ष
८-९-१०-११ वि.२०८२
(गुरु-शुक्र-शनि-रवि)

विश्व के 40 से अधिक देशों से लाखों आर्यजनों की होगी भागीदारी

सम्मेलन की व्यवस्थाओं में आपका आर्थिक सहयोग सादर अपेक्षित है।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

30 अक्टूबर से 2 नवम्बर 2025

दिल्ली

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

कृपया अपनी सहयोग/दान राशि
"दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा"
के नाम निम्नांकित बैंक खाते में या
स्कैन कोड जमा करवाएं।

DELHI ARYA PRATINIDHI SABHA
A/c No. 910010008984897
IFSC:UTIB0002193
Axis Bank, Connaught Place,
New Delhi

-: विशेष अनुरोध :-
कृपया अपनी दान/सहयोग राशि जमा कराते ही डिपोजिट स्लिप/ स्क्रीन शॉट अपने विवरण - नाम, पते, मो.नं. और पैन नं. के साथ 9540040388 पर व्हाट्सएप्प भेज दें, जिससे आपको दान राशि की रसीद भेजी जा सके।

आप सब सपरिवार इष्टमित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं

निवेदक :-

सुरेन्द्र कुमार आर्य	सुरेशचन्द्र आर्य	प्रकाश आर्य	पूनम सूरी	धर्मपाल आर्य
अध्यक्ष	प्रधान	सदस्य	प्रधान	संयोजक महासम्मेलन एवं प्रधान
ज्ञान ज्योति महोत्सव आ.समिति	सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, कोर कमेटी		डी.ए.वी. कॉलेज मैनेजिंग कमेटी	दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

स्वामी धर्मानन्द सरस्वती (ओडिशा), सुदर्शन शर्मा (पंजाब), देशबन्धु मदान (हरियाणा), हरीष आर्य (मुम्बई), जय सिंह गहलौत (राजस्थान), सत्यवीर शास्त्री (मध्य प्रदेश-विदर्भ), जोगीराम भोय (छत्तीसगढ़), भारतभूषण त्रिपाठी (झारखण्ड), स्वामी विद्यानन्द (महाराष्ट्र), संजीव चौरसिया (बिहार), डी.पी. यादव (उ.खण्ड), जगदीश प्रसाद केडिया (बंगाल), श्रीमती दुर्गा देवी चौधरी (असम), प्रबोधचन्द्र सूद (हिमाचल प्रेदश), देवेन्द्रपाल वर्मा (उत्तर प्रदेश), नरेन्द्र त्रेहन (जम्मू-कश्मीर), संजय मिश्किन (कनार्टक), सुरेन्द्र कुमार रैली (आर्य केन्दीय सभा, दिल्ली), ओममुनि (परोपकारिणी सभा), जोगेन्द्र खट्टर (दयानन्द से.संघ), योगेश मुंजाल (टंकारा ट्रस्ट), ललित नांगिया (आर्यसमाज चेन्नई), पीयूष आर्य (वैदिक विद्या केन्द्र, पुदुचेरी), आचार्य एम.आर. राजेश (वेद अनुसंधान फाउंडेशन, केरल)

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ★ ज्ञान ज्योति महोत्सव आयोजन समिति ★ दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

सम्मेलन कार्यालय : दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15- हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001; Mob. 9311721172; Web: www.thearyasamaj.org

सभी पाठकों, अधिकारियों, सदस्यों, कार्यकर्ताओं से अनुरोध है कि सोशल मीडिया - व्हाट्सएप्प, फेसबुक, एक्स, टेलिग्राम, ब्लॉग आदि पर महासम्मेलन प्रचार करें और अपने संस्थान के नोटिस बोर्ड पर भी लगा दें

साप्ताहिक स्वाध्याय

महर्षि दयानन्द की कुछ प्रेरक शिक्षाएं

गतांक से आगे-

गोरक्षा संदेश : हे राजपुरुष, जैसे सूर्य मेघ को मार और उसको भूमि में गिराकर सब प्राणियों को प्रसन्न करता है। वैसे ही गौओं को मारने वालों को मार गो आदि पशुओं को निरंतर सुखी करो।

-ऋग्वेद भाष्य 1/21/10

किसान की महिमा : जो जन भूमि के गुणों को जानने वालों की विद्या को जानके उससे उपयोग करना जानते हैं वे अत्यन्त बल को पाकर सब पृथ्वी का राज्य कर सकते हैं।

-ऋग्वेद भाष्य 1/160/5

राष्ट्र प्रेम : जिस देश के पदार्थों से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है, आगे होगा, उसकी उन्नति तन-मन-धन से सब जने मिलकर प्रीति से करें। - **सत्यार्थ प्रकाश 11वाँ समुल्लास**

संस्कृत ही सभी भाषाओं का मूल है : सब देश भाषाओं का मूल संस्कृत है। संस्कृत जब बिगड़ती है तब अपभ्रंश कहाता है। फिर अपभ्रंश से देश भाषाएं होती हैं। जैसे कि 'घट' शब्द से घड़ा, 'घृत' शब्द से घी, 'दुग्ध' शब्द से दूध, 'नवीन' शब्द से नैनू, 'अक्षि' शब्द से आंख, 'कर्ण' शब्द से कान, 'नासिका' शब्द से नाक, 'जिह्वा' शब्द से जीभ, 'मातर' शब्द से मादर, 'यूयं' शब्द से यू (You), 'वयं' शब्द से वी (We), 'गूढ़' शब्द से गौड (God), इत्यादि जान लेना।

राजा वंशक्रमानुगत न होकर निर्वाचित होना चाहिए : यह सभापति या सभाध्यक्ष राजा वंशक्रमानुगत न होकर 'निर्वाचित' या प्रजाजन (जनता) द्वारा इस पद पर नियुक्त होना चाहिए। - **ऋग्वेद भाष्य**

राजा प्रजा धर्म विषय : 'आर्यों की यह एक बात बड़ी उत्तम थी कि जिस सभा वा न्यायाधीश के सामने अन्याय हो, वह प्रजा का दोष नहीं मानते थे, किन्तु वह दोष सभाध्यक्ष, सभासद् और न्यायाधीश का ही गिना जाता था। इसलिए वे लोग सत्य न्याय करने में अत्यन्त पुरुषार्थ करते थे, जिससे आर्यावर्त्त के न्यायघर में कभी अन्याय नहीं होता था। और जहां होता था वहां उन्हीं न्यायाधीशों को दोष देते थे। यही सब आर्यों का सिद्धान्त है। अर्थात् इन्हीं वेदादि शास्त्रों की रीति से आर्यों ने भूगोल में करोड़ों वर्ष राज्य किया है, इसमें कुछ सन्देह नहीं।'

॥ इति संक्षेपतो राजप्रजाधर्म विषय: ॥22॥ स्रोत-ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका

-क्रमश:

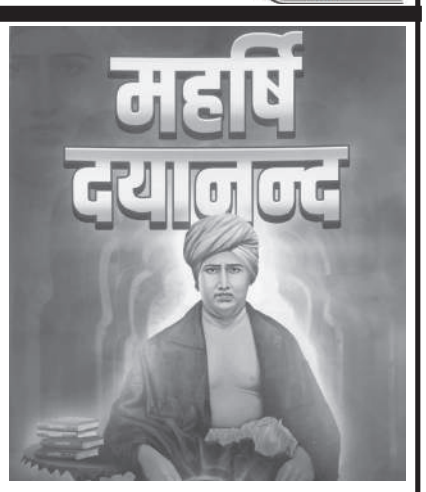

पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति जी द्वारा लिखित एवं 200 वीं जयन्ती पर पुन: प्रकाशित जीवनी 'महर्षि दयानन्द' से साभार
पुस्तक प्राप्ति के लिए ऑन लाइन
www.vedicprakashan.com
अथवा 9540040339 पर आर्डर करें।

Continue From Last Issue

Swamantavya-Vyamantavya Prakash

41. 'Swatantra' - 'Paratantra' The soul is free (Swatantra) in its actions and dependent on (Partantra) God's arrangement in enjoying the fruits of his actions, similarly God is free in doing His work of righteousness etc.

42. The name 'Swarg' is for achievinng special enjoyment and attainment of its material.

43. Narak which is without the attainment of special enjoyment and its material.

44. 'Janmas' which appears after getting a body, on three stage. (1) first (2) middle and (3) last. I believe in all three types.

45. The union of the body is called 'birth' and the separation is called 'death'.

46. 'Vivah' To marry according to prevailing rules and with will and fame, is called 'Vivah'.

47. Niyog In case of death of husband after marriage, separation etc., or in stable diseases like impotence, in case of male or female emergency, giving birth to a child with a woman or man of self-caste or superior caste.

48. Praise of virtues-Kirtan, hearing and having stuti . Its fruit is love etc.

49. 'Prayer' Praying to God for the science etc. that are obtained from God's relationship after one's ability and its result is pridelessness etc.

50. 'Upasna' As God's qualities, deeds, nature are pure, so should be ours, knowing that God is all-pervading, self-pervading, we are close to God and God is close to us. this determination is called upasana. Its fruit is progress of knowledge etc.

51. 'Sagun Nirgun Stuti Prarthna Upasna' praising the qualities that are in the Supreme Lord, considering Him to be different from those that are not are called Sagun Nirgun Stuti desiring God to acquire good qualities and seeking God's help to get rid of faults. Surrendering one's soul to Him and to His command by considering Him to be free from all defects is 'Sagun Nirgun Upasna.'

These axioms have been given in brief. Its special explanation is in the second episode of this 'Satyartha prakash' and it is also written in the books like 'Rigved Bhashya Bhumika', that is, whatever is honorable in front of everyone, I accept those principles, that is, like speaking truth in front of everyone is good and telling falsehood is bad, I accept such principles_ And I don't like the fights that are against each other due to difference of opinion. Because by propagating their beliefs, these drunkards have trapped humans and made them mutual enemies. It is my effort and intention to cut this point, propagate all the truth, bring everyone into unity, get rid of enmity, create strong love among each other and bring good benefits to everyone. With the grace, help and sympathy of the Almighty God, this principle should quickly spread everywhere in the world, so that everyone can easily progress and be happy by achieving charity-work-salvation, this is my main purpose.

Almativistaren
Buddhimadvrayeshu

Om Shanno Mitra: Shan Varun: Shanno Bhavatva'ryama. Shanna Indro Brihaspati: Shanno Vishnururukramah. Namo brahmane. Hi Vayo Twamev Pratyakam Brahmasi. Twamev Pratyakam Brahmavadisham. Ritamvadisham. Satyamvadisam. Tanmaavit. Tadvattfarmavit. Avinmam. Aavidattafaram Om shantih, shantih shantih. II Om shantih, shantih shantih. II

Iti Srimat paramahan saparivraj kacharina param vidushan Sri Virjananda sarasvati svaminam shishyena Srimad dayananda saraswati-swamina virchitah svamanta vyamantavya -prakash Sampurtimagmat

To be Continue.....

With courtesy by the biography of "Maharshi Dayanand" re-published on the occasion of 200th birth anniversary and written by Pt. Indra Vidyavachaspati Ji. To buy online login WWW.vedicprakshan.com or contact - 9540040339

आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन: 30 अक्तूबर से 2 नवम्बर, 25

रेल यात्रा के माध्यम से दिल्ली आने वाले आर्यजन कृपया ध्यान दें

दिल्ली पधारने के लिए आरम्भ हो गए हैं रेलवे टिकट आरक्षण

कन्फर्म टिकट पाने के लिए जल्दी करें और यदि वेटिंग हो तो भी टिकट बुक कराएं सभी को कन्फर्म कराने का प्रयास किया जाएगा

30 अक्तूबर को किसी भी समय दिल्ली पहुंचने और वापसी के लिए 2 नवम्बर की रात्रि अथवा 3 नवम्बर की टिकट करवाएं

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती एवं 150वें आर्यसमाज स्थापना वर्ष- ज्ञान ज्योति महोत्सव के समापन के रूप में आयोजित **आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली-2025** की तिथियां **30 अक्तूबर से 2 नवम्बर 2025** (बृहस्पतिवार से रविवार) सुनिश्चित हैं। इस अवसर पर दिल्ली पधार रहे समस्त आर्यजनों की सुविधा हेतु सूचित किया जाता है कि **रेलवे आरक्षण 30 अगस्त से** आरम्भ हो गए हैं। सभी आर्यजन 30 अक्तूबर को किसी भी समय दिल्ली पहुंचने वाली ट्रेनों में टिकट आरक्षण करवाएं तथा वापसी के लिए 2 नवम्बर की रात्रि या 3 नवम्बर की प्रात: चलने वाली ट्रनों में टिकट करवाएं। जिन स्थानों से किन्हीं विशेष दिनों में ही ट्रेन चलती हैं वे 29 अक्तूबर की रात्रि दिल्ली पहंचने वाली ट्रेनों में आरक्षण करवा सकते हैं। उनके लिए विशेष रूप से सम्मेलन स्थल पर ही आवास एवं भोजन व्यवस्था 29 की रात्रि से उपलब्ध कराई जाएगी। महासम्मेलन स्थल पर पहुंचने के लिए दिल्ली के प्रमुख रेलवे स्टेशनों - नई दिल्ली, दिल्ली जंक्शन, हजरत निजामुद्दीन एवं आनन्द विहार रेलवे स्टेशनों से दिल्ली मैट्रो की सेवाएं ली जा सकती है। **मैट्रो की यैलो लाईन आने वाले रोहिणी सैक्टर-18-19 तथा रैड लाइन मैट्रो से आने वाले रिठाला मैट्रो स्टेशन** पर उतरकर सम्मेलन स्थल पर पहुंचें। आप कहां से, कब और कितने बजे पहुंच रहे हैं, इसकी सूचना अपने ग्रुप लीडर के माध्यम से ग्रुप लीडर के नाम, पते, फोन नं. और ग्रुप में आने वाले सदस्यों की सूची बनाकर सम्मेलन कार्यालय के पते **'15 हनुमान रोड नई दिल्ली-110001'** पर भेजें अथवा **aryasabha@yahoo.com** पर ईमेल करें।अपने ईमेल/पत्र पर 'आवास व्यवस्था हेतु' अवश्य लिखें। अधिक जानकारी लिए **9311721172** से सम्पर्क करें।

- ज्ञान ज्योति महोत्सव आयोजन समिति

ओ३म्

आर्यसमाज स्थापना के 150वें वर्ष

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयंती

आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, 2025

30 अक्टूबर से 2 नवंबर 2025

स्वर्ण जयंती पार्क, सैक्टर 10, रोहिणी, नई दिल्ली 110085

पंजीकरण प्रारंभ

वेबसाइट पर आज ही अपना पंजीकरण करें

www.aryamahasammelan.com

पंजीकरण हेतु उपयोगी निर्देश

जत्था (Group) बनाएं

परिवहन के साधन, आगमन प्रस्थान के समय, आवास चयन, संस्था आदि के आधार पर प्रतिभागियों के अलग-अलग जत्थे बनाएं।

जत्था नायक (Group Leader)

बेहतर प्रबंध हेतु छोटे-छोटे जत्थे बनाएँ (जैसे 25 सदस्य) और प्रत्येक जत्थे का जत्था नायक चुनें।

जत्थे के सदस्यों का पंजीकरण

एक-एक करके जत्थे के सभी सदस्यों का पंजीकरण करें। सभी का अलग- अलग मोबाईल नंबर देंगे तो बेहतर रहेगा।

आवास

प्रत्येक जत्थे की आवश्यकता अनुसार निःशुल्क अथवा सशुल्क आवास चुनें। अपने आवास की व्यवस्था स्वयं भी कर सकते हैं।

आगमन / प्रस्थान

प्रत्येक जत्थे के परिवहन के साधन, आगमन / प्रस्थान के समय और स्थान की सूचना देवें। यह जानकारी टिकट बुक होने के बाद भी दे सकते हैं।

पंजीकरण संख्या

सफल पंजीकरण के बाद प्रत्येक सदस्य की पंजीकरण संख्या उसके मोबाईल नंबर पर भेज दी जाएगी।

कृपया 30 सितम्बर 2025 तक सभी जानकारी अवश्य डाल देवें ताकि हम आपको अच्छी से अच्छी सुविधाएं उपलब्ध कर सकें

पंजीकरण में किसी भी प्रकार की सहायता के लिए 93 1172 1172 पर संपर्क करें

आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, दिल्ली ऐतिहासिक रूप से भव्य, सुव्यवस्थित एवं सफल बनाने हेतु

दिल खोलकर दान दें

आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, दिल्ली-2025 को ऐतिहासिक रूप से भव्य, सुव्यवस्थित, सफल बनाने के लिए समस्त आर्यसमाजों, प्रान्तीय सभाओं, आर्य प्रतिष्ठानों, शिक्षण संस्थानों, आर्य परिवारों एवं औद्योगिक घरानों से सहयोग की अपील की जाती है। कृपया दिल खोलकर दान दें।

अपनी दानराशि का सहयोग **"दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा"** के नाम चैक/बैंक ड्राफ्ट के माध्यम से भेजें अथवा निम्नांकित बैंक खाते में सीधे जमा कराएं। स्कैन कोड द्वारा भी दान राशि प्रदान की जा सकती है। कृपया दान राशि जमा कराते ही डिपोजिट स्लिप/स्क्रीन शॉट **9540040388** पर व्हाट्सएप्प भेजें, जिससे आपको तत्काल दान की रसीद भेजी जा सके।

Delhi Arya pratinidhi Sabha
A/c No. 91001000898 4897 IFSC:UTIB0002193
Axis Bank, Connaught Place, New Delhi

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को दिया गया दान 80जी के अन्तर्गत आयकर मुक्त है।

आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, दिल्ली भव्य स्मारिका का प्रकाशन : वैदिक विद्वानों, लेखकों एवं चिन्तकों महानुभावों से निवेदन

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के 200वें जयन्ती वर्ष एवं 150वें आर्यसमाज स्थापना वर्ष के आयोजनों -ज्ञान ज्योति महोत्सव के समापन के रूप में आयोजित **'आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, दिल्ली- 2025'** के अवसर पर प्रकाशित होने वाली **भव्य स्मारिका हेतु** वैदिक विद्वानों, लेखकों एवं चिन्तकों से आर्य समाज के अनछुए विषयों, समसामयिक विषयों एवं आर्य जगत की महान विभूतियों जिनके कार्यों को आजतक किसी ने नहीं जाना-पहचाना उनकी स्मृतियों को दृष्टिगत रखते हुए लेख आमन्त्रित किए जाते हैं।

इस सम्बन्ध में समस्त वैदिक विद्वानों, लेखकों एवं चिन्तकों महानुभावों से निवेदन है कि अपने लेख ए-4 पेपर पर बाएं साईड में कम से कम 2 इंच का हाशिया छोड़कर स्पष्ट अक्षरों में लिखकर या टाईप कराकर निम्न पते पर भेजें या ईमेल करें।

स्मारिका संयोजक
आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, दिल्ली-2025
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली- 110001 **Email:aryasabha@yahoo.com**

पृष्ठ 3 का शेष

श्राद्ध पर्व : जीवित माता-पिता की सेवा और करें सम्मान

जीवित माता-पिता, आचार्य, अतिथि और समस्त रिश्ते नातों का सम्मान करना, उनकी सेवा, सुश्रूसा करना प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य बताया है।

श्रद्धा की परंपरा पर अगर विचार किया जाए तो समझ आता है कि हम सब जीवात्माएं भी तो पूर्व जन्मों में अपने गुण कर्म स्वभाव के अनुसार कहीं ना कहीं किसी न किसी योनि में रहे होंगे, अगर कोई मनुष्य रहा होगा तो उसका भी उसके परिजन श्राद्ध मनाते होंगे? लेकिन कभी किसी के पास इन श्राद्ध के दिनों में कोई लंच बॉक्स आया है क्या? अगर नहीं, तो फिर जिन मृतकों के प्रति यह विचार करके ब्राह्मण को भोजन कराया जाता है, दान-दक्षिणा दी जाती है कि उनके पितरों कोई पास पहुंच जाएगी, तो यह कैसे संभव होगा? इस पर गहराई से विचार अवश्य करें। और यह भी जरूरी सोचें कि अगर कोई वर्ष में एक दिन भोजन कर भी दे, तो 364 या 65 दिन तक क्या कोई किसी के पितर भूखे रहेंगे? जब हम इस तरह चिंतन मनन करेंगे तब पता चलेगा कि यह श्रद्धा परंपरा अमानवीय और निरर्थक है।

अतः हम सबको महर्षि दयानंद सरस्वती जी के उपदेश को स्वीकार करते हुए यह सुनिश्चित करना चाहिए कि हम अपने जीवित माता-पिता, आचार्य और बड़े बुजुर्गों का सम्मान करें, उनके द्वारा निर्देशित पांच मूर्तिमान देवताओं की भावनाओं को समझें, परस्पर आदर करें, सेवा करें और उन्हें संतुष्ट रखें, तभी हम अपने परिवार, समाज, देश और दुनिया में सुख शांति और समृद्धि के साथ जीवित रहेंगे।

आधुनिक परिवेश में जो दिखाई दे रहा है वह बड़ा ही दुखदायक और कष्टकारी है। आज विदेशों की तर्ज पर भारत में भी वृद्धाश्रमों की भरमार होती जा रही है, वृद्ध जन या तो अपने ही घरों में बेगानों की तरह जीने को मजबूर हैं, अगर दो बेटे हैं तो दोनों अलग-अलग रहने के लिए विवश हैं, इससे भी आगे एक महीने एक बेटे के घर और दूसरे महीने दूसरे बेटे के साथ रहकर जीवन बिता रहे हैं अथवा किसी का एक बेटा है तो वे वृद्धाश्रमों में रहने को मजबूर हैं। यह सब देख कर तो यही लगता है कि "जीवित माता-पिता के साथ तो दंगम दंगा, और कई मरने के बाद पहुंचावे गंगा" यह संस्कृति हमारी नहीं है, हमें तो अपने राम, कृष्ण, भीष्म पितामह आदि प्रेरणा लेकर यह व्रत लेना चाहिए कि जब तक माता-पिता जीवित रहें तब तक हम उन्हें अपमानित और तिरस्कृत ना करें, बल्कि उनकी सेवा और सम्मान करने के अवसर को अपना सौभाग्य समझें, उनकी भावनाओं का भी ध्यान रखें, अगर उन्हें किसी चीज की आवश्यकता है तो अपनी सामर्थ्य से उनको संतुष्ट रखें, अगर उनको कहीं घूमने के लिए जाना है तो उन्हें भ्रमण कराएं और अगर उन्हें कुछ विशेष खाने का मन करता है तो उनकी मनपसंद का उन्हें खाना खिलाएं ,उन्हें अकेले में रहने के लिए मजबूर करें, उनको वृद्ध आश्रम में न जाना पड़े, तांगे गे में जुतने वाला घोड़े की तरह उनसे व्यवहार न करें कि जब तक घोड़ा तांगा खीचता है, तब तक उसको अच्छा खाना जैसे चने और आहार खिलाया जाता है, लेकिन जैसे ही उसकी ताकत खत्म होती है तो फिर उसे उसके हाल पर छोड़ दिया जाता है।इसको लेकर युवा पीढ़ी अपने उस समय को याद करे कि जब माता-पिता के कंधों पर बैठकर हम मेला देखते थे और बड़ा अच्छा लगता था। वे हमें खिलाते पिलाते थे, अपना पेट काटकर भी हमारा पेट पालते थे, आज अगर वह बुजुर्ग है तो हम यह भी ध्यान रखें कि उन्होंने हमें जन्म दिया, पढ़ाया लिखाया, लायक बनाया, अपने पैरों पर खड़ा किया। अब हमारी भी जिम्मेदारी है कि हम उनका पूरा ख्याल रखें, वह हमें जेब खर्ची भी देते थे और खाना खिलाने के लिए कहां-कहां लेकर के जाते थे। तो हमें भी अपने कर्तव्य और दायित्व को निभाना चाहिए, तभी हमारा कल्याण होगा। इस श्राद्ध वाली परंपरा को छोड़कर जीवित माता-पिताओं का सम्मान करें, सेवा करें और महर्षि दयानंद के सिद्धांतों और आर्य समाज की मान्यताओं को अपनाकर अपना जीवन सफल बनाएं।

⑧ साप्ताहिक आर्य सन्देश
सोमवार 1 सितम्बर, 2025 से रविवार 7 सितम्बर, 2025
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
दिल्ली पोस्टल रजि.नं. डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2024-25-2026
LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 4-5-6/09/2025 (वीर-शुक्र-शनिवार)
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2024-25-26
आर.एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 3 सितम्बर, 2025

प्रतिष्ठा में,

आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

श्री योगी आदित्यनाथ जी से भेंट एवं चर्चा

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती वर्ष और आर्य समाज के 150वें स्थापना वर्ष के 2 वर्षीय आयोजनों के भव्य, विशाल एवं विराट समापन समारोह के रूप में आयोजित आर्यसमाज अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, दिल्ली-2025 की तैयारी, निमंत्रण तथा प्रचार प्रसार का कार्य युद्ध स्तर पर गतिशील है। इस क्रम में 27 अगस्त, 2025 को आर्यसमाज बस्ती (उ.प्र.) के प्रधान श्री ओम प्रकाश आर्य जी, श्री गरुढ़ध्वज पाण्डेय जी ने मुख्यमन्त्री आवास पर पहुंचकर भेंट की और चर्चा के दौरान इस महासम्मेलन में पधारने का निमन्त्रण दिया। महासम्मेलन के संयोजक एवं सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी को भेंट हेतु पहुंचाना था, किन्तु अत्यधिक बारीश और खराब मौसम के चलते नहीं पहुंच सके।

माननीय मुख्यमन्त्री श्री योगी आदित्यनाथ जी के साथ श्री ओमप्रकाश आर्य जी, श्री गरुढ़ ध्वज पाण्डेय एवं अन्य महानुभाव।

दिल्ली एन.सी.आर. स्थित आर्य केन्द्रीय सभा फरीदाबाद के माध्यम फरीदाबाद स्थित आर्यसमाजों एवं आर्य संस्थाओं को महासम्मेलन का निमन्त्रण देने के लिए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा महामन्त्री श्री विनय आर्य जी एवं आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के प्रधान श्री देशबन्धु मदान जी आर्यसमाज सैक्टर-7 फरीदाबाद में पहुंचे।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्प्लेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह